03 / 02 / 76 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

धर्म और कर्म का कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करना

➢➢ दिव्य गुण धारण करना।

➳_ ➳ मैं आत्मा सर्वगुणसम्पन्न शिवबाबा से कंबाइंड हूँ

→ शिवबाबा की शक्तिशाली किरणें निरन्तर मुझ आत्मा पर पड़ रहीं हैं

→ मैं आत्मा सर्वगुणों से भरपूर हो रही हूँ

→ मैं पद्मापदम सौभाग्यशाली आत्मा जो स्वयं भगवान ने कोटो में कोई और कोई में भी कोई मुझ आत्मा को अपना बना लिया

→ मैं आत्मा परमात्म पालना में पल रही हूँ

■ मैं मास्टर सर्वगुणसंपन्न आत्मा हूँ मुझसे चारों ओर सर्व गुण और शक्तियों के वायब्रेशन्स फैल रहें हैं।

➳ _ ➳ मैं आत्मा करावनहार हूँ

→ शिवबाबा ने अपना बनाकर आत्मा और परमात्मा का सृष्टि के आदि मध्य अंत का सत्य ज्ञान दिया कर्म करने का अलौकिक ज्ञान दिया

→ मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ यह ज्ञान दिया

→ मैं मेरा मेरेपन का बोध कराया आत्म अभिमानी और देह अभिमानी का अंतर समझाया

→ यह समझाया कि कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करने वाली मैं आत्मा हूँ

→ यह कर्मेन्द्रियाँ कर्मचारी हैं

→ लेकिन इन कर्मचारियों से कर्म कराने वाली मैं करावनहार हूँ न्यारी प्यारी आत्मा हूँ

→ मैं आत्मा बार बार अभ्यास करती हूँ कि मैं करावनहार बन कर्म कर रही हूँ

→ मैं आत्मा हर कर्म बाबा की याद में रहकर करती हूँ

→ योगयुक्त होकर कर्म करने से हर कर्म धर्मयुक्त भी हो जाते है

■ मैं आत्मा हर कर्म में न्यारी बन कर्मयोगी स्थिति में कर्म करती हु ईश्वांसों श्वांस बाबा की याद में रह स्वयं को करावनहार शक्तिशाली आत्मा समझ हर कर्म कर रही हूँ।

■ बाबा की याद में रहकर कर्म करने से हर कर्म में धर्म का रस भरती जा रही हूँ।